ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड V अंक 4

जुलई - 2013

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

भारतीय कृषिउद्यमियों की मणिपुर शाखा पंजीकरण हेतु तैयार/तत्पर

मणिपुर राज्य के सफल कृषिउद्यमियों की झलकियाँ

भारतीय कृषिउद्यमी संगठन की मणिपुर शाखा गत कुछ वर्षों से, अनौपचारिक रूप से कार्यरत रही है। अब कृषिउद्यमियों के इस दल ने श्री एन. बसंत सिंह को अपने अध्यक्ष तथा श्री एच. जॉन सिंह को अपने सचिव के रूप में चुनकर और उद्देश्यों का ज्ञापन रजिस्ट्रार, सहकारी समितियाँ, मणिपुर सरकार को सौंप दिया है। इस संगठन के पंजीकरण के साथ ही, मणिपुर राज्य के प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों को अपने सामूहिक प्रयासों को देश के अन्य भागों के सहयोगियों के साथ एकीकृत करने का अवसर मिलेगा । इस फोरम के माध्यम से, कृषि उद्यमियों को अपनी सामान्य समस्याओं जैसे – व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना, बैंक से ऋणों की प्राप्ति तथा नये कृषि उद्यमियों के समक्ष आने वाली क्षेत्र (फील्ड) स्तर की कठिनाइयों आदि के संबंध में आपसी चर्चा परिचर्चा करने का मौका मिलेगा । अन्य राज्यों में कार्यरत फोरमों के माध्यम से उभरे हुए मुद्दों के द्वारा नई नीतियों के निर्माण का रास्ता सुगम हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप योजनाओं के उद्देश्यों का कार्यान्वयन बेहतर ढंग से होता है। भारतीय कृषि उद्यमियों के संगठन की राज्य–शाखाएँ पहले से ही आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उŸारप्रदेश और छŸाीसगढ़ में कार्यरत हैं। श्री एम.नागराजू, अध्यक्ष, आंध्रप्रदेश भारतीय कृषिउद्यमी संगठन, ने आंध्रप्रदेश में एक फोरम की स्थापना की शुरूआत की साथ ही वे अन्य राज्यों के कृषिउद्यमियों को भी ऐसे फोरमों की स्थापना हेतु उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं । श्री नागराजू से 093911 44445 पर संपर्क किया जा सकता है। जिन राज्यों में अब तक ऐसे फोरम गठित न हो पाए हों वहाँ के प्रशिक्षित कृषिउद्यमी प्रक्रिया की पहल कर सकते हैं।

मणिपुर में सहकारी प्रबंधन संस्थान (ICM) इम्फाल ही एकमात्र नोडल प्रशिक्षण संस्थान है जो 2002 से ए.सी. व ए.बी.सी. योजना का प्रचार–प्रसार कर रहा है । अब तक इस संस्थान द्वारा 14 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं जिनमें 388 प्रत्याशियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है जिसमें से 117 व्यक्ति मत्स्यिकी से सेरीकल्चर क्षेत्रों में कृषि वैचरों की स्थापना कर चुके है। ए.सी. व ए.बी.सी के प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. जॉय चंद्रा भारतीय कृषि उद्यमी संगठन, मणिपुर शाखा की स्थापना के सूत्रधार हैं।

इस अंक में :

- भारतीय उद्यमियों की मणिपुर शाखा पंजीकरण के लिए तत्पर
- **माह के कृषिउद्यमी**
  श्री रशफ़ाक बुखारी
  श्रीनगर
  जम्मू–कश्मीर
- **माह का प्रमुख संस्थान**
  कृष्णा वैली अग्रिम कृषि फाउंडेशन (सांगली, महाराष्ट्र
- **कृषिउद्यमी, मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें** - 1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान,

कृषि तथा सहयोग विभाग, कृषि मंत्रालय

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

श्री इशफ़ाक बुखारी, जम्मू और कश्मीर, द्वारा सेब की फसल पर विशिष्ट जानकारी का विस्तारण

कश्मीर घाटी की कठिन परिस्थितियाँ भी श्री इशफाक बुखारी जैसे समर्पित व्यक्तियों की उद्यमी भावनाओं का दमन नहीं कर पाई जिन्होंने अपनी तथा अपने साथियों की आर्थिक आज़ादी को कायम रखने हेतु अपने जीवन को एक चुनौती के रूप में स्वीकार कर सभी कठिनाइयों का सामना किया । श्री बुखारी ने कृषि की सक्षमताओं को जोतकर श्रीनगर में अपना प्रतिष्ठान स्थापित करने हेतु अथक प्रयास किया ।

श्री बुखारी ने दिसम्बर, 2012 के दौरान भारतीय कृषि व्यापार व्यावसायिक सोसायटी से ए.सी. व ए. बी.सी का प्रशिक्षण पूरा किया । उनक अनुसार – 'मैंने स्वयं को एक व्यापार का एक अच्छा अवसर देने के अलावा कृषि समुदाय की सहायता के लिए कृषि –क्लीनिक खोलने का निर्णय लिया । चूँकि जम्मू और कश्मीर एक कृषि प्रधान राज्य है, यहाँ अधिकांशत: फलों की फसलें उगाई जाती हैं – विशेषकर सेब की खेती जिसमें अलग–अलग प्रकार के उर्वरकों के साथ–साथ कीटनाशकों का भी प्रयोग किया जाता है।

मैं अक्सर किसानों को स्थानीय कृषि व्यापारियों की सिफारिश पर उर्वरकों का छिड़काव करते तथा बीजों का प्रयोग करते हुए देखा करता था। अधिकांश मामलों में मुझे दोनों में कोई फर्क नज़र नहीं आता था। श्री बुखारी मूलत: बारामुला जिले के ग्रामीण क्षेत्र के निवासी हैं और वे किसानों की समस्याओं से भलीभांति परिचित हैं । अपनी परियोजना के प्रारंभिक चरण के दौरान, उन्होंने घर–घर जाकर किसानों से उनका साथ देने के लिए प्रोत्साहित किया । अपनी आगे की गतिविधियों में उन्होंने किसानों को कीटनाशकों, उर्वरकों, बीजों और अन्य वस्तुओं की सही मात्रा की जानकारी दी, ताकि वे लाभप्रद तरीके से अपनी फसलें उगा सकें वह भी दीर्घकालिक तौर पर । श्री बुखारी ने लगभग 500 किसानों को प्रोत्साहित कर उन्हें एक संगठन के तहत एकत्रित किया जिसका नाम है – 'ऐपल प्लॅनेट ऐग्री –क्लीनिक' । इस जिले में यह अपनी तरह का पहला संगठन है। किसानों के फायदे के लिए श्री बुखारी, कृषि वैज्ञानिकों/अधिकारियों आदि से भी परामर्श ले रहे हैं। कीटनाशकों की दुकान के साथ–साथ इस कंसल्टेंसी बिजनेस ने टर्नओर में अद्भुत वृद्धि करते हुए सामाजिक हित की भावना भी प्रदान की है।

सेवाओं की परिधि, किसानों की फसल योजना की गतिविधियों से आरंभ होती है। सर्वप्रथम किसानों के पास उपलब्ध जमीन को तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है – फलों का बगीचा, सिंचित और वर्षा से भीगी जमीन । तत्पश्चात भूमि के प्रत्येक वर्ग के आधार पर उपयुक्त फसल उगाने का सुझाव दिया जाता है। उदाहरण के लिए पहले किसान सेबों के बगीचे में भुट्टे उगाया करते परंतु अधिक नमी की सोखने के कारण जमीन पर पपड़ी जमने लगी । परंतु श्री बुखारी ने उस जमीन पर भुट्टों के बजाय फलियाँ उगाने की सलाह दी । इस परिवर्तन से न केवल पपड़ी जमने में कमी आई बल्कि मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा भी बढ़ने लगी । एक अन्य बदलाव ने किसानों की आर्थिक रूप से मदद की वह था – कांटॅक्ट फफूँदनाशक के स्थान पर सिस्टमॅटिक फफूँदनाशक के प्रयोग का सुझाव। इस समस्त सेवाओं के बदले में किसानों को हर महीने 500रु. चुकाने होते हैं – चाहे उनकी जमीन किसी भी आकार की हो ।

श्री बुखारी से 095 960 14004 पर संपर्क किया जा सकता है, ई–मेल istaqbukhari79@gmail.com

कृष्णा घाटी अग्रिम कृषि फाउंडेशन (KVAAF), सांगली, महाराष्ट्र

कृष्णा घाटी अग्रिम कृषि फाउंडेशन (KVAAF),एम/एस सूरज फाउंडेशन का एक संबंधित असोसिएशन है जो पुणे स्थित प्रणव ग्रुप ऑफ कंपनी की एक सामाजिक इकाई है। इसकी स्थापना विशेष रूप से महाराष्ट्र के सांगली में 1993 में कृषि प्रवर्तनों के प्रोन्नयन तथा किसानों को बेहतर कृषि हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से की गई है। इस वर्षों के दौरान, फाउंडेशन ने बागवानी, ड्रिप सिंचाई और सेरीकल्चर पर महाराष्ट्र के कई भागों में प्रदर्शन प्लॉट विकसित किए है।

ए.सी. व ए.बी.सी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए योजना के प्रारंभ से अर्थात् 2002 से ही KVAAF मैनेज से संलग्न है। अपने संबंध के एक दशक के अंतर्गत यह फाउंडेशन, महाराष्ट्र के नोडल प्रशिक्षण संस्थान के रूप में विकसित हुआ है और महाराष्ट्र में ए.सी. व ए.बी.सी. योजना का व्यापक प्रचार–प्रसार कर रहा है। वर्ष 2011 में इसने दो और उप केन्द्रों की स्थापना की – एक कोल्हापुर जिले के उत्तूर में और दूसरा नागपुर के समीप कन्हान में । इन तीनों संस्थानों ने अब तक ए.सी. व ए.बी.सी. योजना के तहत 2356 कृषि उद्यमियों को प्रशिक्षित किया है– जिसमें से 1050 व्यक्ति कृषि वेंचर स्थापित कर चुके है। इन 1050 व्यक्तियों में से 515 कृषि –क्लीनिक और कृषि –व्यापार केन्द्र हैं, 197 डेअरी इकाइयाँ और 129 पशु क्लीनिक हैं। महाराष्ट्र राज्य में, ज्ञट।।थ के प्रशिक्षित कृषि उद्यमियों और स्थापित वेंचरों का भाग क्रमशः 32.88 प्रतिशत तथा 34.41 प्रतिशत है।

KVAAF द्वारा अपनाई गई उत्तम पद्धतियाँ निम्नलिखित है –जिनके फलस्वरूप ए.सी. व ए.बी.सी. योजना का कार्यान्वयन सफलतापूर्वक हो रहा है।

- उम्मीदवारों की काउंसिलिंग, प्रशिक्षण से पहले अनुभवी स्टॉफ सदस्यों द्वारा की जाती है ताकि उनकी व्यापारिक सोच, पारिवारिक पृष्ठभूमि, निवेश–क्षमता, जोखिम उठाने की क्षमता औद्योगिक/मार्केटिंग अनुभव और प्रशिक्षण के 2 महीनों की अवधि तक रहने की तैयारी की पूरी जानकारी प्राप्त हो सके।
- प्रतिभागियों से एक याचिका पर हस्ताक्षर करवाए जाते है, जिसमें यह घोषणा होती है कि इससे पहले उन्होंने इस प्रकार के प्रशिक्षण में भाग नहीं लिया है और वे इस प्रशिक्षण में नियमित रूप से भाग लेंगे और प्रशिक्षण प्राप्ति के तीन महीनों के भीतर वे अपना व्यापार आरंभ करेंगे ।
- प्रशिक्षण के उद्घाटन और समापन समारोहों के अवसर पर बैंकों, नाबार्ड राज्य स्तर कृषि विभागों और आत्मा (।ज्ड।) आदि के सदस्यों को आमंत्रित किया जाता है ताकि भविष्य में प्रतिभागी अपने व्यापारिक वेंचरों की स्थापना के समय उनकी मदद ले सकें।
- प्रशिक्षणार्थियों की सूझबूझ की गहराई का मूल्यांकन करने के लिए तथा उन्हें मौजूदा अवसरों एवं सफल व्यापार के तरीकों से अवगत करवाने के लिए KVAAF के अनुभवी सदस्यों के साथ मध्यवर्ती प्रशिक्षण काउंसलिंग करवाई जाती है।
- बाज़ार सर्वेक्षणों और प्रकटन विजिटों के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को व्यापार मोडालिटीज़ के व्यावहारिक पहलुओं से अवगत करवाने हेतु प्रयास किए जाते है । इस सर्वेक्षणों में उनके वेंचरों के लिए धन जुटाने से संभावित तरीकों पर भी चर्चा की जाती है।
- निर्धारित समयावधि/मॉड्यूलों के बाद भी प्रतिदिन प्रशिक्षणार्थियों के लिए आई.टी. की कक्षाएँ संचालित की जाती है । प्रशिक्षणार्थियों को अपना ई–मेल पता बनाने हेतु प्रेरित किया जाता है और उन्हें कृषि व्यापार की साइटों को ब्राउज़ करना भी सिखलाया जाता है। उनकी कंप्यूटर संबंधी जानकारी को बढ़ाने के लिए KVAAF द्वारा विकसित इन हाउज़ आई.टी. पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है।
- प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न बैंकरों जैसे – एल.डी.एम. व नाबार्ड के ए.जी.एम. को प्रशिक्षणार्थियों के साथ ऋण–प्रस्तावों, स्वीकृति–प्रक्रियाओं पूर्व अथवा उत्तम स्वीकृति, रियायत, दावा प्रक्रिया आदि पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया जाता है।
- प्रशिक्षण अवधि के अंतिम चरण में कृषि निगम के लीडरों को प्रशिक्षणार्थियों से अंतःक्रिया (interact) हेतु बुलाया जाता है। नाबार्ड के एल.डी.एम. और ए.जी.एम. से संपर्क करके प्रशिक्षणार्थियों की इच्छानुसार बैंकों को परियोजना रिपोर्ट भिजवाई जाती है।
- एक वर्ष की निर्धारित अवधि के आगे तथा महाराष्ट्र राज्य के अलावा भी प्रशिक्षणार्थियों को आगे भी सहयोग दिया जाता है।
- KVAAF द्वारा संचालित कृषि व्यापार के कार्यक्रमों के लाभों को ए.सी. व ए.बी.सी के प्रशिक्षणार्थियों पर भी लागू किया जाता है ताकि उन्हें अधिक फायदा मिल सके ।
- एक विशेष पहल के तौर पर ज्ञट।।थ ने अन्य संस्थानों के नोडल अधिकारियों की महाराष्ट्र में बैठक आयोजित की गई ताकि प्रशिक्षणार्थियों को बैंकरों के साथ होने वाली समस्याओं पर चर्चा की जा सके तथा अन्य नोडल अधिकारियों द्वारा अपनाई जा रही पद्धतियों को लागू किया जा सके । ऐसी बैठकों में उस क्षेत्र विशेष की प्रतिष्ठित कृषि व्यापार कंपनियों से संबंधित, जानकारी, अन्य कृषि उद्यमियों को दी जाती है।
- आत्मा/कृषि/संबंधित विभागों से सघन संपर्क रखा जाता है। जो राज्य द्वारा संचालित कृषि परियोजनाओं में शामिल कृषि उद्यमियों को परामर्शकों के रूप में नियुक्त करने में सहायक होते हैं।

Sri. N.G. Kamath, Nodal Officer

कृषि उद्यमियों के लिए प्रमुख जानकारी

वेंचर पूँजी – यह प्रारंभिक अवस्था, उच्च जोखिम और उच्च क्षमता वाले प्रतिष्ठानों (वेंचरों) हेतु ईक्विटी वित्तीय सहायता है। पहले यह फाइनेंस, केवल उच्चस्तरीय आई.टी. अथवा बायोटेक्नोलॉजी के लिए ही सीमित था । परंतु वर्तमान में कृषि तथा कृषि व्यापार के लिए कई वेंचर–पूँजी निधियाँ उपलब्ध हैं।

दीर्घकालिक उद्यम निधि – इस फंड का उद्देश्य, नवप्रवर्तन और कृषि उद्यम का ऊर्जा, खाद्य, स्वास्थ्य एवं जल आदि क्षेत्रों में दीर्घकाल के लिए प्रोन्नयन करना है। ईक्विटी या ऋण के माध्यम से इसमें प्रतिभागिता की जा सकती है। व्यापार योजना के लिए (www.elevarequity.com) पर आवेदन करें । भारत में यह कार्यालय बैंगलूर में स्थित है और 080–4142 1717 पर संपर्क कर सकते हैं।

आई.एफ.एम.आर वेंचर – यह निधि ग्रामीण आपूर्ति श्रृंखलाओं के छूटे हुए संपर्कों को जोड़ती है। प्राथमिक तौर पर वे ऐसी कंपनियों में निवेश करने में दिलचस्पी रखते हैं जो ऐसे व्यक्तियों के साथ काम करती है जो, कई ग्रामीण उद्यमों में काम करते है। यह वैंचर पहले ही, अर्थ–गुड्स में निवेश कर चुके हैं जहाँ हस्तशिल्प की आपूर्ति कई ग्रामीण कारीगरों द्वारा की जाती है। आपको अपनी व्यापार योजना www.ifmrtrust.co.in अधिक जानकारी के लिए आप 044–65687000 पर संपर्क कर सकते हैं।

कुछ जरुरी वेब–लिंक्स एवं सूचना – कृषि विभाग एवं समन्वयन (www.agricoop.nic.in)

- **किसान एस.एम.एस.पोर्टल** – यह पोर्टल भारत के राष्ट्रपति द्वारा आरंभ किया गया है जिसका प्रयोग, कृषि तथा उसकी गतिविधियों से जुड़ी जरुरी सूचना के लिए किया जा सकता है।
- स्वचालित मौसम स्टेशनों (AWS) की स्थापना हेतु ड्रॉफ्ट दिशा निर्देश – AWS उपकरण स्टैंडर्ड संबंधी सूचना प्रदान करता है। जैसे संस्थापन एवं अनुरक्षण मानक आदि ।
- पूर्वी भारत में हरित क्राति लाने हेतु सहयोग – 1000 करोड़ रु. के आवंटन के साथ ही पूर्वी भारत में हरित क्रांति लाने हेतु सहयोग का शुभारंभ हो चुका है (असम, बिहार, , छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल) ।

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

"प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि"

'कृषि उद्यमी' का प्रकाशन
श्री बी श्रीनिवास, आईएएस,
महानिदेशक, मैनेज, हैदराबाद द्वारा किया जाता है।

हमें संपर्क करें
कृषि उद्यमिता विकास केंद्र (सीएडी) राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान (मैनेज), राजेन्द्र नगर, हैदराबाद,
पिन–500030 आन्ध्र प्रदेश, भारत
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल: helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस
संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर
सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति
: **सुश्री ज्योति सहारे**